बी.ए. द्वितीय वर्ष
प्रथम प्रश्न पत्र

— डा० कृष्ण शंकर यादव

अरस्तू का आदर्श राज्य (Ideal State)

→ अरस्तू ने प्लेटो के "लाज" से प्रेरणा लेकर उसके आदर्श-राज्य को निश्चित रूप में अपने आदर्श-राज्य के रूप में ग्रहण किया।
– अरस्तू वहां से प्रारम्भ करता है जहां से प्लेटो छोड़ देता है। (सिन्क्लेयर)
→ अरस्तू के आदर्श राज्य का उद्देश्य :– उत्तम जीवन की उपलब्धियों तथा ऐसे जीवन की प्राप्ति के लिए आवश्यक भौतिक और आत्मिक साधनों की व्यवस्था करना है।

⇒ आदर्श राज्य का स्वरूप (Form of the Ideal State) :–

① जनसंख्या (Population) — संतुलित जनसंख्या। आत्मनिर्भरता के आधार पर राज्य की जनसंख्या का निर्धारण। विवाह पर राजकीय नियंत्रण और परिवार नियोजन का समर्थन।

② भूमि — व्यापार की दृष्टि से समुद्र के नजदीक, सुरक्षा एवं आत्मनिर्भर बना सके वैसी भूमि राज्य के पास होनी चाहिए।

③ राज्य के आवश्यक वर्ग :– (i) कृषक – भोजन (ii) शिल्पी – कला-कौशल (iii) योद्धा – शस्त्र (iv) सम्पत्तिशाली वर्ग – सम्पत्ति (v) पुरोहित – देवपूजन (vi) सार्वजनिक हित का निर्णायक – सार्वजनिक हित। युवावस्था में देश रक्षा, प्रौढ़ अवस्था में शासन संचालन तथा वृद्धावस्था में पुरोहिती का कार्य प्रत्येक नागरिक को करना चाहिए।

④ विधि की सम्प्रभुता (Sovereignty of Law) – विप्लव एवं क्रांति से बचाव हेतु।

⑤ नागरिकों का चरित्र ⑥ शिक्षा – शारीरिक, नैतिक, सैनिक एवं बौद्धिक शिक्षा

⑦ आदर्श राज्य की स्थिति (Situation of the Ideal State) – (i) युद्ध – वायु और स्वास्थ्यवर्धक परिस्थिति (ii) राजनीतिक सुविधा (iii) सैनिक आवश्यकता की पूर्ति

→ राज्य के पास पर्याप्त जल, सड़कें एवं किले की व्यवस्था होनी चाहिए।
– राज्य की विभिन्न समस्याओं पर चिन्तन करने के लिए एक लोकप्रिय परिषद होनी चाहिए जिसके सम्मुख शासन के सभी विषय प्रस्तुत किये जाये।
– प्रशासनिक अधिकारियों और न्यायपालिका की व्यवस्था होनी चाहिए।